शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 17
Issue 1&2
15, Jan- July, 2026

भारतीय ज्ञान परंपरा एवं सूफी कवि

बीज शब्द :

भारतीयता, परंपरा, सूफी दर्शन, साहित्य, इल्म (ज्ञान)

भारतीय ज्ञान परंपरा और सूफी काव्य दोनों ही भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर हैं। दोनों के मूल में मानवता, प्रेम, सत्य, नैतिकता और आध्यात्मिक चेतना का विकास है। प्रमुख सूफी कवियों में अमीर खुसरो, बाबा फरीद, शाह हुसैन, शेख शर्फुद्दीन, बुल्लेशाह, बंदानवाज गेसूदराज, शाह मीरों भी इसी श्रृंखला के व्याख्याता हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा और सूफी साहित्य भारतीय संस्कृति की समन्वयवादी भावना के प्रतीक हैं। साथ ही दोनों मानवता, नैतिकता और आध्यात्मिक उत्थान की प्रेरणा भी प्रदान करते हैं।

*****

डॉ० अजीज रजा
एसोसिएट प्रोफेसर, उर्दू विभाग
जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पी0जी0 कालेज, बाराबंकी।

भारतीय ज्ञान परंपरा एवं सूफी कवि

हिंदुस्तानी इल्मी रवायत वेद, पुराण, दर्शन, शास्त्र, योग और आयुर्वेद जैसे (प्राचीन) कदीम इल्म पर ही मबनी है। जहाँ तक उर्दू जबान की बात है तो यह कहना गलत नहीं होगा कि उर्दू हिंदुस्तान की मिट्टी में ही पैदा हुई, यहीं की तहजीब, संस्कृति, दर्शन और साहित्य का अभिन्न अंग बन गई। उर्दू शायरी के माध्यम से सूफीवाद और साहित्य ने भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेशी रूप को बढ़ावा दिया।

हिंदुस्तानी इल्मी रवायत का मकसद Modern Science के साथ कदमी रवायत और तहजीब और इल्म का समन्वय करना है और इसमें उर्दू जबान एक पुल की तरह और इसका अदब एक सेतु जैसा है। सच पूछिये तो उर्दू की Ideological Values and Traditions इसकी एखलाकियात में मुजमर (निहित) हैं।

हिन्दुस्तान कसीर मजाहिब, अकायद, जबान, रसूम और रवायात का अमीन है लेकिन इसकी कसरत में एक वहदत मौजूद है, जो इसका खास्सा है। यानी हिन्दुस्तान की एकदार टंसनमेए एलाकियात और तहजीबी खूसूसियात एक ऐसे गुलदस्ते की तरह है जिसकी मिसाल पूरी दुनिया में मिलना नामुमकिन है। हिन्दुस्तान का मुखतलिफ मुआशिरा अपनी तहजीबी शिनाख्त से अलग है लेकिन इन सबमें एक कदरे मुशतरक भी है जो इसे दूसरों की तहजीब से अलग करते हुए इसे हिन्दुस्तानी बनाती है और वह है इसकी हिन्दुस्तानियत। इसी हिन्दुस्तानियत को अनेक सूफी संतों ने अपने विचारों से आगे बढ़ाया, परवान चढ़ाया और नतीजे में जबान भी परवान चढ़ती गयी या यूँ कहें कि फरोग पाती गयी। इस लेख में हम चन्द सूफियों का जिक्र करेंगे जिन्होंने उर्दू जबान का सहारा लिया।

उर्दू जबान के फरोग से मुतअल्लिक, जब हम विभिन्न माहरीन-ए-लिसानियात के फराहम करदा मवाद को देखते हैं और उसका मुतालेआ करते हैं तो यह बात निकलकर सामने आती है कि उर्दू जबान के फरोग और इसकी नशोनुमा में सूफिया हजरात ने नुमायाँ किरदार अदा किया है। ये मुखलिस लोग ईश्वर का पैगाम और इंसानियत की बातें लोगों तक पहुँचाने के लिए आसान और लोगों को समझ आने वाली जबान का इस्तेमाल करते थे और वह अपनी बातों से सिर्फ लोगों के दरवाजों पर ही नहीं उनके दिलों पर भी दस्तक देना चाहते थे। ''ये सूफिया हजरात जहाँ भी जाते वहाँ की जबान सीखकर उस इलाके के लोगों तक उन्हीं की जबान में अपना पैगाम पहुँचाते। इस तरह उन्होंने अवाम की जबान अपनायी और इसके दायरे को वसीअ (वृहद) किया।'' 1

सूफिया हजरात से पहले अहले इल्म उर्दू में लिखना अपनी शान के खिलाफ समझते थे। इन सूफिया ने इस रवायत से बगावत की और अवाम से अवाम की जबान में कलाम किया। यानी कि खवास की अदबी जबान के बजाय अवाम में राएज जबान को अपना पैगाम पहुँचाने का जरिया बनाया। उन्होंने इलाकाई जबानों के अल्फाज और संस्कृत जबान में राएज मजहबी इस्तेलाहात तक इस्तेमात कीं। इनकी कोशिशों से इस जबान का दायरा वसीय होता गया और मौलवी अब्दुल हक के लफ्जों में ''सूफियों की ही जुरअत का फैज था कि उनकी देखा देखी दूसरे लोगों ने भी इसका इस्तेमाल शेरो सुन, मजहब-व तालीम, और इल्म व हिकमत के एगराज (गरज की जमा) के लिए शुरू कर दिया। यही वजह है कि मैं सूफियाए कराम को उर्दू का मोहसिन समझता हूँ।'' 2

इन सूफिया हजरात की फेहरिस्त जरा लम्बी है, यहाँ पर कुछ खास का जिक्र करना ही मकसूद है।

1. अमीर खुसरो: सातवीं सदी हिजरी के इस बुजुर्ग ने उर्दू जबान को अदबी शान अदा करने में बेपनाह खिदमात अंजाम दीं। इन्होंने बाकायदा तौर पर फारसी और हिन्दी की आमेजिश से उर्दू का अव्वलीन रूप पेश किया। उनकी तरफ मन्सूब ये शेर देखिए -

गोरी सोवे सेज पर मुख पर डारे केस,
चल खुसरो घर आपने सांझ भई चहुं देस !!

अब पेश है अमीर खुसरो की वह गजल जिसकी एक पंक्ति फारसी में है और दूसरी हिन्दवी में। यह खुसरो की बहुत ही प्रसिद्ध गजल है और आम तौर पर इसे कव्वाली के तौर पर भी गाया जाता है:

जिहाल-ए-मिसकीं मकुन तगाफुल दुराय नैनाँ बनाए बतियाँ।
कि ताब-ए- हिज्राँ नदारम ऐ जाँ न लेहू काहे लगाए छतियाँ।।
शबान-ए-हिज्राँ दराज चूँ जुल्फ ओ रोज-ए-वसलत चूँ उम्र-ए-कोताह।
सखी पिया को जो मैं न देखूँ तो कैसे काटूँ अँधेरी रतियाँ।।
यकायक अज दिल दो चश्म जादू ब-सद-फरेबम ब-बुर्द तस्कीं।
किसे पड़ी है जो जा सुनावे पियारे पी को हमारी बतियाँ।।
चूँ शम-ए-सोजाँ चूँ जर्रा हैराँ ज मेहर-ए-आँ-मह बगश्तम आखिर।
न नींद नैना न अंग चौना चौनाँ न आप आवे न भेजे पतियाँ।।
ब-हक्क-ए-रोज-ए विसाल दिलबर कि दाद मारा गरीब 'खुसरव'।

सपीत मन के वराय रखूँ जो जा के पाऊँ पिया की खतियाँ।।
अनुवाद:-

'मुझ गरीब मिसकीन की हालत से यूँ बेखबर मत बनो। आँखें मिलाते हो, आँखें चुराते हो और बातें बनाते हो। ऐ मेरी जान! जुदाई सहन करने का सामर्थ्य मुझमें नहीं है। मुझे अपने सीने से क्यों नहीं लगा लेते।

'जुदाई की रातें जुल्फ की तरह लम्बी हैं और मिलन के दिन जिन्दगी की तरह छोटे हैं। हे सखी! अगर मैं अपने पिया को न देखूँ तो अँधेरी रातें कैसे काटूँ।

जादू भरी इन दोनों आँखों ने अचानक सैकड़ों बहाने से मेरा धैर्य सुकून छीन लिया है। किसके पास वक्त है कि मेरे जी की बात सुने अर्थात् मेरा दु:ख सुने।

मैं शमाँ की तरह जल रहा हूँ और जर्रे की तरह हैरान हूँ। मैं उस संगदिल की मुहब्बत में गिरफ्तार हो गया हूँ। मेरी आँखों में न नींद है और न दिल को चौन है। मेरा प्रिय इतना बेरहम है कि न तो खुद आता है और न अपने आने की चिट्ठी ही भेजता है।

मिलन वाले दिनों की कसम, मेरे महबूब ने मेरे साथ फरेब किया है। ऐ खुसरो, मैं अपने दिल की इन बातों को अपने दिल में ही दबाकर रखता, अगर मैं यह जान जाता कि मुझे उससे धोखा ही मिलेगा।

2. शेख शर्फुद्दीन - यह शेख साहब पूरबी और हिन्दी जबान के शायर थे। इनकी तरफ झाड़-फूँक के मन्तर मन्सूब हैं जो हिन्दी जबान में हैं जिसने आगे चलकर उर्दू की शक्ल अख्तियार की। इनके कलाम में आध्यात्मिक प्रेम और सूफीवाद की झलक मिलती है। मिसाल के तौर पर ये कलाम देखिये:

शर्फ सिर्फ मायल करे, दर्द कहूँ न बसाय,
गर्द हुए दरबार की सो दर्द दूर हो जाय।
साँकर कुएँ पताल पानी, लाखन बूँद बिकाय,
बजर परो तँह मथुरा नगरी, कान्ह पियासा जाय !! 3

3. ख्वाजा बन्दानवाज गेसू दराज - सैयद मुहम्मद हुसैनी जिन्हें आमतौर पर ख्वाजा बन्दा नवाज गेसू दराज के नाम से जाना जाता है, भारत के एक मशहूर सूफी बुजुर्ग थे जिन्होंने विभिन्न धार्मिक समूहों के बीच समझ, सहिष्णुता और सद्भाव की वकालत की, इनकी कई तसानीफ हैं जैसे मेराजुल आशकीन, हिदायत नामा, शिकारनामा, और तिलावतुल वजूद वगैरह।

एक शेर देखिए:

नक्काश जब तुझ देखिया सूरत तेरी लिख न सकिया,
इन जसद कर जितना जिया सब जनम अपना खोयकर।।

''गेसूदराज'' ''मुहब्बते इलाही'' के बयान में लिखते हैं- मुहब्बत के उसलूब के असबाब व मूजेबात तरह-तरह के होते है। एक अकलमन्द आदमी यह सोचता है कि जब हर शै फना होने वाली है तो उम्र को किस काम में सर्फ करना चाहिए। सबसे बेहतर और उम्दा शै इबादते इलाही है।'' 4

4. शाह मीराँ जी शम्सुल उश्शाक: आपका नाम मीराँ जी, मीरा खाँ शमसुद्दीन और अमीरूद्दीन
बताया गया है। आपके रूहानी फयूज से लाखों बन्दगाने खुदा फैजयाब हुए।

एक शेर देखिये:

जे कोई जीवैं सब मरैं दाएम जीवे ने कोय,
कयामत लग जे जीवैं तो आखिर मरना होय।।

इन सूफिया हजरात के अलावा भी कई नाम है जिन्होंने अपनी जबान और तसनीफ से उर्दू जबान के दायरे को वसीअ करने और उसमें अदबी शान पैदा करने का कारनामा अन्जाम दिया। ये सही है कि इन सूफियों के पेशे नजर उर्दू जबान की तरक्की नही थी, इन्होनें तो बस अपना पैगाम पहुँचाने के लिए इस अवामी जबान को इजहार का जरीया बनाया था मगर इसमें नए चराग रोशन होते गए और उर्दू जबान के फरोग की नई नई राहें खुलती गयीं।

उर्दू शायरी के माध्यम से दर्शन (सूफीवाद) और साहित्य ने भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेशी रूप को बढ़ावा दिया। उर्दू ने न केवल शायरी, बल्कि भारतीय संदर्भ में दर्शन, इतिहास और लोक जीवन को अभिव्यक्त करने वाली भाषा के रूप में खुद को स्थापित किया है।

सन्दर्भ

1.जीम से जुमले तक - सलीम शहजाद पृष्ठ संख्या 34.35.
2.उर्दू की इबतेदायी नशोनुमा में सूफियाए कराम का हिस्सा - मौलवीं अब्दुल हक, पृष्ठ संख्या 21-22
3.मकतूबाते शेख शर्फुद्दीन यहया- पृष्ठ 14
4.''(फवाएदे हजरत बन्दा नवाज)'' लेखक- मो0 माशूक हुसैन खान सुल्तानी पृष्ठ 57
5.मीराँ जी शम्सुल उश्शाक- मो0 हाशिम अली पृष्ठ संख्या-9